खण्ड–12, अंक–2
मंगलवार, 21 पौष, शक संवत् 1926
(11 जनवरी, 2005 ई0)

उत्तरांचल विधान सभा

की

कार्यवाही

–: 0 :–

(अधिकृत विवरण)

(प्रथम विधान सभा)

(प्रथम सत्र, 2005)

(खण्ड 12 में 7 अंक हैं)

उत्तरांचल विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक :
उप निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, रुड़की, उत्तरांचल (भारत)
2005

मूल्य :

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ–संख्या
उपस्थिति	क
वर्तमान विधान सभा के माननीय सदस्य श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी के निधन पर शोकोद्गार	1–8
भारतवर्ष के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पामुलपति वेंकट नरसिम्हा राव के निधन पर शोकोद्गार	8–12
"त्सुनामी" लहरों से भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में हुई लाखों लोगों की मृत्यु पर शोकोद्गार	13–17

उपस्थिति

1. श्री अजय भट्ट
2. श्री अनिल नौटियाल
3. डॉ0 अनुसूया प्रसाद मैखुरी
4. श्री अरविन्द पाण्डे
5. श्रीमती आशा देवी
6. श्रीमती इन्दिरा हृदयेश
7. श्री उम्मेद सिंह मांजिला
8. श्री काशी सिंह ऐरी
9. श्री कैलाश शर्मा
10. श्री कौल दास
11. श्री गगन सिंह
12. श्री गणेश प्रसाद गोदियाल
13. श्री गोपाल सिंह राणा
14. श्री गोविन्द लाल
15. श्री गोविन्द सिंह कुंजवाल
16. श्री चन्द्रशेखर
17. श्री जोत सिंह
18. श्री तसलीम अहमद
19. श्री तिलक राज बेहड़
20. श्री तेजपाल सिंह रावत
21. श्री दिनेश अग्रवाल
22. श्री नरेन्द्र सिंह भण्डारी
23. श्री नव प्रभात
24. श्री नारायण दत्त तिवारी
25. श्री नारायण पाल
26. श्री नारायण राम आर्य
27. श्री नारायण सिंह जंतवाल
28. श्री प्रकाश पंत
29. श्री प्रदीप टम्टा
30. श्री प्रीतम सिंह
31. श्री प्रीतम सिंह पंवार
32. श्री प्रेमानन्द महाजन
33. श्री पुष्पेश त्रिपाठी
34. श्री फूल सिंह बिष्ट
35. श्री बलबीर सिंह नेगी
36. श्री विजयपाल सिंह सजवाण
37. श्री बिशन सिंह चुफाल
38. श्री भगत सिंह कोश्यारी
39. श्री मदन कौशिक
40. श्री महेन्द्र भट्ट
41. श्री महेन्द्र सिंह माहरा (मद्दू भाई)
42. श्री मातबर सिंह कण्डारी
43. श्री माल चन्द्र
44. चौ0 यशवीर सिंह
45. श्री रणजीत सिंह
46. श्री राम प्रसाद टम्टा
47. श्रीमती विजय बड़थ्वाल
48. श्री शूरवीर सिंह
49. श्री सहजाद
50. श्री साधू राम
51. श्री सुबोध उनियाल
52. श्री सुन्दर लाल मन्द्रवाल
53. श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी
54. श्री सुरेश चंद जैन
55. डॉ0 हरक सिंह रावत
56. श्री हरबंस कपूर
57. श्री हरभजन सिंह चीमा
58. श्री हरिदास
59. श्री हरीश चन्द्र दुर्गापाल
60. श्री हेमेश खर्कवाल
61. श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत

मंगलवार, दिनांक 11 जनवरी, 2005 ई0

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, देहरादून में दिन के 11.00 बजे पूर्वाह्न अध्यक्ष श्री यशपाल आर्य की अध्यक्षता में आरम्भ हुई)

वर्तमान विधान सभा के माननीय सदस्य श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी के निधन पर शोकोद्‌गार

मुख्यमंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)–

श्रीमन्, मैं अन्दर के अन्तर दिल से दुःखी होकर इस सदन की शोभा बढ़ा रहे, श्री त्रिपाठी आज हमारे बीच में नहीं हैं। मान्यवर, जो अपनी विशेष प्रतिभा को लेकर शोभायमान रहते थे, द्वाराहाट विधान सभा क्षेत्र के सदस्य स्वर्गीय श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी की मृत्यु पर अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और यदि आपकी आज्ञा हो तो सदन की ओर से हार्दिक शोक संवेदना व्यक्त करने का प्रस्ताव रखता हूँ। मान्यवर, मुझे स्व0 त्रिपाठी जी के राजनीतिक, सामाजिक कार्यकलापों के बारे में प्रारम्भ से ही परिचित होने का अवसर मिला। मान्यवर, जब हम लोग उत्तर प्रदेश में कार्य करते थे, तो उनकी विलक्षण प्रतिभा की हमें वहां सूचना मिलती रहती थी। द्वाराहाट में इंटर कॉलेज तथा पॉलिटेक्निक कॉलेज खुलवाने में भी उनका विशेष योगदान रहा। मान्यवर, स्व0 त्रिपाठी जी केवल द्वाराहाट, चौखुटिया का विकास ही नहीं चाहते थे, बल्कि वे सम्पूर्ण अविभाजित उत्तर प्रदेश के भू–भाग का विकास चाहते थे। मान्यवर, उत्तरांचल राज्य बनाने में भी उनका अभूतपूर्व योगदान रहा। उनके जाने से जो रिक्तता हुई है, वह सार्वजनिक जीवन में भी पूरी नहीं की जा सकती है। आज स्व0 त्रिपाठी जी के सुपुत्र श्री पुष्पेश त्रिपाठी जी, माननीय विधान सभा सदस्य के रूप में चुने गये और यह इस बात का प्रतीक है कि किस प्रकार वहां की जनता ने उनको अपने हृदय में स्थान दे रखा है। श्री पुष्पेश जी को उनके आधे–अधूरे कार्यों को पूरा करना होगा, इन कार्यों को पूरा करने में हमारा श्री पुष्पेश त्रिपाठी को पूरा सहयोग रहेगा। मान्यवर, मेरे मुंह से माननीय सदस्य का नाम पुष्पेन्द्र निकल रहा है, यह इसलिए निकल रहा है चूँकि यह नाम ज्यादा आकर्षक है। मान्यवर, मैं स्व0 श्री त्रिपाठी के प्रति उनके शोक संतृप्त परिवार तथा उनके विशाल परिवार, प्रशंसकों, मित्रों, सहयोगियों का और यहां तक कि जो उनका राजनैतिक विरोध करते थे, उनके हृदय में भी उनके प्रति विशेष आदर था।

मैं, ऐसे जुझारू और आम जनता के हितों के प्रति समर्पित एक महान पुरुष के लिए शोक व्यक्त करता हूँ और मैं प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले।

नेता प्रतिपक्ष (श्री मातबर सिंह कण्डारी)–

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने स्वर्गीय श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी के निधन होने पर जो शोक प्रस्ताव और सम्वेदना व्यक्त की है, इससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, माननीय त्रिपाठी जी बहुत ही जुझारू और संघर्षशील नेता थे। इनका जन्म 23 फरवरी, 1945 में हुआ और मृत्यु 30 अगस्त, 2004 को हुई। इनकी शैक्षिक योग्यता बी0ए0 है और आई0टी0आई0 में डिप्लोमा किया। इन्होंने उत्तरांचल राज्य बनाने में संघर्ष और आन्दोलन किया और इस आन्दोलन में 7 बार जेल गये। आप पहली बार 1974 में विधान सभा का चुनाव लड़े और पराजित हुए। सन् 1986 में ब्लॉक प्रमुख बने और ब्लॉक

प्रमुख के नाते अपने क्षेत्र में चहुमुखी विकास किया। आप सन् 2002 में विधायक बनकर इस सदन में आये। आपने वन कटानों के खिलाफ 1973–74 में बड़ी भूमिका अदा की और वनों की रक्षा के लिए आपका बड़ा सहयोग था। आपने 1973–74 में "नशा नहीं, रोजगार दो" एक ऐसा नारा दिया जो हमें प्रेरणा देता है। उनका कहना था कि उत्तरांचल में नशा नहीं रोजगार दो, कितना अच्छा नारा दिया। इसके साथ ही साथ आपने आन्दोलन छेड़ा कि यदि विकास में पेड़ बाधक हैं तो उनको काटने में पीछे नहीं रहेंगे, 1986 में यह आन्दोलन छेड़ा। आप उत्तरांचल के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्प लेते थे, आप गाँधी विचार धारा के व्यक्ति रहे, आपने हमेशा गरीबों का साथ दिया। मान्यवर, माननीय त्रिपाठी जी ने 23 जुलाई को सदन में कहा कि विभाग में तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी कमजोर होते हैं इसलिए इनके साथ न्याय होना चाहिए, यह आपकी भावना थी। मान्यवर, जब भ्रष्टाचार चरम सीमा पर फैल गया था तो आपने 31 अगस्त, 1994 को ब्लॉक प्रमुख पद से त्याग–पत्र दे दिया अर्थात् आप भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए बहुत ही सजग थे। आप उत्तराखण्ड पार्टी से इस सदन में आये। आपने उत्तरांचल राज्य बनाने में जो भूमिका और संघर्ष किया वह सदैव हमारे लिए प्रेरणा का श्रोत रहे।

मान्यवर, आप उत्तरांचल विधान सभा में आवास समिति, सरकारी आश्वासन समिति और लोक लेखा समिति के सदस्य रहे। स्व0 त्रिपाठी जी के साथ मुझे उत्तरकाशी में एक सड़क के निरीक्षण में जाने का मौका मिला और जो भावना उन्होंने व्यक्त की कि कैसे हम अपने प्रदेश का भला करेंगे। सरकारी धन का किस तरह से दुरूपयोग हो रहा है, उन्होंने यह भी कहा कि सड़क के लिए धन दिया जाता है फिर भी निर्माण कार्य ठीक से नहीं होता है तब कष्ट होता है, ऐसा कहते हुए स्व0 श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी के आँखें में आँसू आ गये थे। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार ने हमारे विकास कार्य को जर्जर कर दिया है इसको समाप्त करने के लिए हमें आन्दोलन चलाना चाहिए। अभी माननीय नेता सदन ने शोक और संवेदना का प्रस्ताव सदन में व्यक्त किया, इससे मैं और मेरा दल इस भावना से अपने को सम्बद्ध करते हुए स्व0 श्री त्रिपाठी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनके परिवार में श्रीमती रेनू त्रिपाठी और तीन पुत्र एक पुत्री हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस दुःख की घड़ी में उन्हें इस दुःख को सहन करने की क्षमता दे। उनके पुत्र श्री पुष्पेश त्रिपाठी इस सदन के माननीय सदस्य हैं, मैं आशा करता हूँ कि वे अपने पिता जी के सिद्धान्तों पर चलेंगे और देश की जनता की सेवा करेंगे। मान्यवर, हमारी भावना आपके माध्यम से उनके परिवार तक पहुँचे।

*श्री हरिदास–

मान्यवर, मैं स्व0 श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी को श्रद्धांजलि देते हुए जो भावना नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष ने व्यक्त की मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूँ। स्व0 श्री त्रिपाठी जी बहुत ही अच्छे विधायक थे, जो उत्तरांचल के समस्त जिलों और क्षेत्रों से भली–भाँति परिचित थे। वे विधान सभा में जो प्रश्न उठाते थे उनको उसकी पूरी जानकारी रहती थी। स्व0 श्री त्रिपाठी जी के साथ मुझे एक बार लोक लेखा समिति के अध्ययन भ्रमण में गोवा और महाराष्ट्र जाने का अवसर प्राप्त हुआ। मान्यवर, वे बहुत ही अच्छे स्वभाव के व्यक्ति थे। बड़ा दुःख है कि वे 30 अगस्त, 2004 को इस दुनिया से विदा

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

हो गये। मैं आशा करता हूँ कि उनके पुत्र श्री पुष्पेश त्रिपाठी भी उनके सिद्धान्तों पर चलें। मान्यवर, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस दुःख की घड़ी में उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री काशी सिंह ऐरी–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं स्व0 विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी को श्रद्धांजलि देते हुए, जो भावना नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी ने व्यक्त की है उससे अपने आप को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूँ कि स्व0 त्रिपाठी जी का निधन न केवल हमारे उत्तराखण्ड क्रान्ति दल के लिए अपितु हमारे नये प्रदेश की पहली विधान सभा के लिए भी यह एक बहुत बड़ी हृदय विदारक दुर्घटना है।

मान्यवर, मैं समझता हूँ कि जो भावनाएं हमारे माननीय नेताओं ने व्यक्त की हैं, वे और उससे भी ज्यादा भावना में अभिभूत हमारे सम्मानित सदन के सभी माननीय सदस्य होंगे जिन्होंने त्रिपाठी जी को देखा है, सुना है और उसके साथ किसी न किसी रूप में उनका सम्पर्क रहा है। हमारे नेता सदन माननीय तिवारी जी तो उनको बहुत पहले से जानते रहे हैं, जब वे समाजवादी युवजन सभा में सक्रिय थे। अपने कैरियर, अपने परिवार की परवाह न करके अपने जीवन की शुरूआत में ही उन्होंने तराई, भाभर में भूमिहीनों, मजलूमों की सेवा का संकल्प लिया था और जो अवसर उस लड़ाई को, उनके जज्बातों को जीवन के इतने वर्षों बाद भी छोड़ नहीं पाये थे और आज भी वो गाहे–बगाहे उन कमजोर तबको की हालत को देखकर दुखी हुआ करते थे। मैंने यह जिक्र इसलिए किया कि माननीय नेता सदन ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं और माननीय नेता सदन के बारे में वे अक्सर कहा करते थे कि उन्होंने जीवन भर समाज के उत्थान का कार्य किया है। माननीय नेता प्रतिपक्ष ने भी भावनाएं व्यक्त की हैं। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री कोश्यारी जी यहां बैठे हैं, उनके भी वे बहुत करीबी रहे हैं। उनके बारे में वे अक्सर जिक्र किया करते थे। मान्यवर, वे अपने सिद्धान्तों के प्रति बहुत आग्रही थे। किसी भी सूरत में, किसी भी हालात में वे अपने सिद्धान्तों से, मान्यताओं से समझौता नहीं करते थे। मुझे एक वाक्या याद है। महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल बोरा के प्रमुख सचिव थे, श्री सुशील त्रिपाठी जी। वे इमरजेंसी के समय अल्मोड़ा के जिलाधिकारी थे। एक बार मेरी चर्चा उनसे हुई, वह आन्दोलन का दौर था और उन दिनों उत्तर प्रदेश में राज्यपाल का शासन था। हम ज्ञापन देने के लिए गये हुए थे। श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी वहां पर उपस्थित नहीं थे। श्री सुशील त्रिपाठी जी ने पूछा कि क्या ये वही विपिन चन्द्र त्रिपाठी हैं जो इमरजेन्सी के समय जेल में बंद रहे थे। मैंने कहा कि हाँ, तो उन्होंने कहा कि वे बड़े अक्खड़ मिजाज के व्यक्ति थे। उन्होंने बताया कि जब मैं अल्मोड़ा का जिलाधिकारी था, उस समय श्री त्रिपाठी जी का द्रोणांचल प्रहरी नाम से एक अखबार निकलता था। उसमें उन्होंने कोई समाचार छाप दिया था जो प्रेस सेंसरशिप की परिधि में आता था। मैंने अपने ए0डी0एम0 को भेजा और कहा यदि वे यह लिखकर दे दें कि मुझे प्रेस सेंसरशिप के नियमों की जानकारी नहीं है, तो मैं कोई कार्यवाही नहीं करूँगा। एस0डी0एम0 ने मुझे वापस आकर बताया कि वे कतई मानने के लिए तैयार नहीं हैं, तो उन्होंने कहा कि मुझे इसकी जानकारी है और मैंने जानकारी होते हुए छापा है तथा प्रशासन को जो कार्यवाही करनी हो कर

लें। इस वजह से उन्हें गिरफ्तार भी किया गया, उस समय प्रेस सेंसरशिप के नियम काफी कड़े थे, माननीय नेता सदन जानते हैं कि इमरजेंसी के दौरान अगर सबसे ज्यादा समय तक जेल में कोई रहा तो वे स्वर्गीय त्रिपाठी जी थे। 19 महीने तो सर्वाधिक रहे हैं लेकिन त्रिपाठी जी 24 महीने तक इमरजेंसी के दौरान जेल में रहे।

मान्यवर, जब इमरजेंसी खत्म हो गई और चुनाव आये तो मुझे याद है कि मैंने भी उनसे कहा था कि अभी आपको टिकट मिल गया और आप जीत गये। इमरजेंसी के खिलाफ लोगों का आक्रोश है, लेकिन उन्होंने विधान सभा का टिकट लेने के लिए कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, तब तक जनता पार्टी भी बन गई थी और उन्होंने कहा कि यदि पार्टी वाले आवश्यक समझेंगे तो टिकट देंगे, मुझे कोई लालसा नहीं है। ऐसा महान व्यक्तित्व था, त्रिपाठी जी का। कोई लालच या कोई महत्वाकांक्षा उन्हें छू भी नहीं सकती थी, वे अपने मूल्यों और मान्यताओं की हर हाल में रक्षा करते थे। जितने भी माननीय सदस्य उनके सम्पर्क में आये हैं, वे सब भी इन चीजों को जानते हैं और वे अपनी बातों को साफ–साफ रखते थे, अपनी बात कहते हुए उन्हें चाहे नेता सदन के सामने अपनी बात रखनी हो या माननीय भगत सिंह कोश्यारी जी के सामने बात रखनी हो या हम जैसे साधारण सदस्यों से अपनी बात कहनी हो, वे अपनी बात को किसी भी रूप में रख देते थे और रखने के बाद वे भूल भी जाया करते थे, ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व था उनका। श्रीमन्, इस बात को मैं ही नहीं सभी माननीय सदस्य भी जानते हैं कि अगर इस विधान सभा में उनका कार्यकाल लम्बा होता तो यह हमारी विधान सभा के लिए सौभाग्य की बात होती। उनके नैतिक मूल्यों, उनकी दृढ़ता का लाभ सभी माननीय सदस्यों को मिलता, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन जो होना था, नियति का जो खेल है, वह पूरा होना था और वह पूरा हुआ तथा वे हमारे बीच से अचानक चले गये। सभी माननीय सदस्यों को इसका शोक है और संताप है। जब उनकी मृत्यु का समाचार मुझे मिला था तो मैंने उनके ज्येष्ठ और लघु भ्राता से कहा था कि उनका बड़ा भाई और छोटा भाई उनके बीच नहीं रहा है, लेकिन मेरा तो बड़ा भाई, छोटा भाई और मेरा दोस्त अब नहीं रहा है, इस दुनिया से चला गया है। मैं तो इस बात को सहन कर रहा हूँ और आपको भी करना चाहिए, ऐसी सांत्वना मैंने उनको दी। आज तक भी मैं स्वयं को सांत्वना दे रहा हूँ। स्वर्गीय त्रिपाठी जी की भरपाई करना असंभव ही नहीं बल्कि बहुत मुश्किल भी है। यह पूरा सदन इस घटना से आहत है। राहत वाली बात यह है कि आप सबके आशीर्वाद से, आपकी सद्भावनाओं से उनके सुपुत्र श्री पुष्पेश त्रिपाठी द्वाराहाट क्षेत्र की जनता का आशीर्वाद, उनका विश्वास और उनकी आस्था हासिल कर आज इस सदन में स्वर्गीय त्रिपाठी जी की जगह पर आए हैं। हम आशा करते हैं कि पुष्पेश त्रिपाठी अपने पूज्य पिता के व्यक्तित्व को, उनके चरित्र को, उनके कृतित्व को आगे बढ़ाएगें और स्वर्गीय त्रिपाठी जी की जो कमी हम सबको खल रही है, उसको पूरा करने में सफल होंगे, यही कामना आज हम इस अवसर पर करते हैं। मान्यवर, मैं सभी माननीय नेताओं को धन्यवाद देते हुए उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूँ तथा आप से प्रार्थना करता हूँ कि मेरी ओर से और हमारे दल की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार को सांत्वना प्रदान करें।

श्री अध्यक्ष–

यदि कोई माननीय सदस्य बोलना चाहें, तो बोल सकते हैं।

*श्री प्रकाश पंत–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन द्वारा रखे गए इस शोक प्रस्ताव पर और माननीय नेता प्रतिपक्ष तथा अन्य दलों के नेताओं द्वारा व्यक्त की गयी संवेदनाओं से मैं अपने को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, कल जब मैं सदन में आया था तो बरबस ही मेरी निगाहें उस खाली सीट की ओर चली गयीं, जिसमें माननीय त्रिपाठी बैठा करते थे। श्रीमन्, वर्ष 1979 का वह दौर मुझे याद आ रहा है, जब मैं राजकीय पॉलीटेक्निक, द्वाराहाट में छात्र बन कर गया था और उसके द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत रहते हुए त्रिपाठी जी से मेरी मुलाकात हुई। पहली बार ऐसे जुझारू व्यक्ति से मैं मिला था, मैं उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। राजकीय डिग्री कॉलेज खोले जाने की मांग को लेकर द्वाराहाट की जनता आन्दोलनरत थी और जनता का नेतृत्व कर रहे थे, स्वर्गीय विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी। अचानक उन्होंने अपने चरणबद्ध कार्यक्रम के तहत आमरण अनशन की घोषणा कर दी और उस आमरण अनशन की घोषणा के साथ छात्र नेता होते हुए हम लोगों ने भी सहयोग किया। वे अनवरत सम्भवतः 9–10 दिन तक निर्जल भूख हड़ताल पर बैठे रहे। मुझे याद आता है, माननीय अजय भट्ट जी और मैं, हम दोनों भी इस आन्दोलन में उनके साथ थे। डॉक्टरों ने बार–बार उनका चिकित्सकीय परीक्षण किया और उनसे कहा कि आपके शरीर से एसीटोन और कीटोन दोनों निकलने लगे हैं, आपकी दोनों किडनियां खराब हो सकती हैं, आप आन्दोलन समाप्त कर दें। मान्यवर, उनका व्यक्तित्व और वे घटनाएं आज भी मुझे भुलाए नहीं भूलती हैं। उनका आक्रोश और जनता के प्रति उनके समर्पण की भावना निरन्तर हमें प्रेरणा देती है।

10–11 दिन बाद जब उनको जूस पिलाकर, उनका अनशन तोड़ा गया और उस समय जिस भाव और जिस आक्रामकता के साथ उन्होंने द्वाराहाट के मैदान पर उसी ऊर्जा से उसी स्फूर्ति से भाषण दिया था, वह क्षण मैं भूल नहीं सकता। ऐसा लगता ही नहीं था कि यह वही व्यक्ति है जो 12 दिन तक आमरण अनशन के बाद भाषण दे रहा है। आज जब इस प्रथम निर्वाचित विधान सभा में माननीय त्रिपाठी, विधान सभा सदस्य निर्वाचित होकर आए तो भी मैंने वही जुझारूपन देखा जो मैंने 27 वर्ष पूर्व उनमें देखा था।

इस सदन में उन स्मृतियों को याद करते हुए कहना चाहूँगा कि दिनांक 30 अगस्त का वह दिन, उस दिन हम लोग यह विश्वास नहीं कर पा रहे थे, अचानक सूचना आई और यह निश्चित रूप से पूरे उत्तरांचल के लिए ही नहीं बल्कि हम सबके लिए भी बहुत बड़ी दुःख की घड़ी थी। वे उत्तराखण्ड क्रान्ति दल के थिंक टैंक ही नहीं कहे जा सकते थे बल्कि गरीबों, बेसहारा, किसानों, छात्रों, नौजवानों और झुग्गी झोपड़ी वालों के लिए अनवरत संघर्ष में रहने वाले विशालतम व्यक्तित्व व विशाल वट वृक्ष ढह गया। वह वट वृक्ष अपने दिखाये गये मार्ग पर, दिशा–निर्देश पर चलने के लिए हमको प्रेरित कर गया। उन्होंने उत्तरांचल राज्य के विकास के लिए जो स्वप्न देखा था उसे हम सभी को साकार करना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि उन्होंने जो लड़ाई लड़ी थी, अंतिम पंक्ति में खड़े हुए व्यक्ति के लिए जो स्वप्न देखा, इस सदन में हम सबको

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उनके संघर्ष को याद करते हुए, उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। अन्त में मैं उनके लिए यह कहना चाहूँगा कि–

"ढूंढ़ता हूँ, उनको, उनकी समानता तलाशता हूँ,
उनको हर मानव के जीवन चरित्र पर, लेकिन पता नही क्यों,
मुझे ऐसा लगता है, तलाश मेरी अधूरी है।"

*श्री भगत सिंह कोश्यारी–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे सम्मानित सदस्य स्व0 श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी अब हमारे बीच में नहीं रहे। यूँ तो हमारे माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के हमारे साथी उनके बारे में काफी बातें कह चुके हैं। उसके बाद उनके बारे में मुझे कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं है किन्तु चूँकि माननीय अध्यक्ष जी ने मुझसे उनके बारे में बोलने को कहा और मेरी स्वयं की भी इच्छा थी। श्री त्रिपाठी मेरे कुछ एक अच्छे मित्रों में से एक थे। हालाँकि स्वभाव में हम दोनों में काफी भिन्नता थी, एक प्रकार से कह सकते हैं दो अलग–अलग धुरियाँ किन्तु वे फिर भी मेरे एक निकटतम मित्रों में से एक थे। मुझे आज भी वह दिन याद है जब हम मीसा के अन्तर्गत बंद थे, जैसा कि मेरा स्वभाव है, जेल में भी हम सब एक साथ हँसी–खुशी से आपस में बैठ कर छोटी–मोटी जेल के अंदर हो रही अनियमितताओं को नजरअंदाज कर देते थे, किन्तु श्री त्रिपाठी प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति सदैव सजग रहते और जो जेल के अंदर हमारे अधिकार हैं उनके बारे में सदैव सजग रहते थे कि वे अधिकार तो हमें मिलने ही चाहिए। जेल के अंदर भी उन्होंने संघर्ष किया यह मैंने स्वयं उनके साथ जेल के अंदर रहकर देखा। बाद में हम दोनों को बरेली तथा अल्मोड़ा जेल में ट्रांसफर किया गया। मेरी पहले भी नारेबाजी की आदत नहीं थी अब भी नहीं है। लेकिन वे एक जुझारू नेता आरम्भ से ही थे।

मान्यवर, वे जेल से बाहर निकले और तब से लेकर "बस" में भी और बरेली जेल में पहुँचने तक लगातार नारे लगाते रहे। मान्यवर, मैं ज्यादा नारेबाजी करता नहीं हूँ, लेकिन उनको देखकर मैंने भी "बस" में नारे लगाये। मान्यवर, माननीय ऐरी जी को याद होगा जब मैं पिथौरागढ़ में रहता था तो मैंने और श्री त्रिपाठी जी ने किराये के मकान में खिचड़ी भी साथ–साथ खायी है।

मान्यवर, दो अलग–अलग विचारधाराओं के रहते हुए भी स्व0 श्री त्रिपाठी जी मेरे अभिन्न मित्रों में से थे। मान्यवर, 16 अगस्त को मैं बागेश्वर से होते हुए द्वाराहाट में था, परन्तु मेरे पास समय की बहुत कमी थी। चलने से पहले मैंने स्व0 श्री त्रिपाठी जी से फोन पर वार्ता की। उन्होंने फोन पर ही मुझे कहा "भगत दा, आप थोड़ी देर के लिए आइए और एक कप चाय हमारे यहां पी लीजिए"। मान्यवर, मुझे इस बात का आभास नहीं था कि स्व0 त्रिपाठी जी इतनी जल्दी हमारे बीच से चले जायेंगे। मान्यवर, स्व0 श्री त्रिपाठी के पूर्व साथी श्री जसवन्त सिंह जी का उनके बारे में कहना था कि यदि उनसे पूछा जाय कि बज्र कहां पड़ेगा तो उनका कहना था हमारे क्षेत्र में। मान्यवर, इसका आशय यह है कि श्री त्रिपाठी जी अपने क्षेत्र के प्रति इतने लगनशील थे। मान्यवर, स्व0 श्री त्रिपाठी जी न केवल अपने क्षेत्र के प्रति अपितु पूरे प्रदेश के बारे में सोचते थे। मान्यवर, हम लोगों

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

को उनकी लगनशीलता से सीख लेनी चाहिए। राजनीति के इस विपिन दा में अगर हमारे पुष्पेश खिल गये तो यह अच्छा रहेगा। मैं, श्री पुष्पेश त्रिपाठी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। अन्त में, मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से शोक संतृप्त परिवार को सांत्वना देता हूँ।

*श्री नारायण पाल–

माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे स्व0 त्रिपाठी जी के बारे में बोलने का अवसर दिया इसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। मान्यवर, जब से मैंने स्व0 त्रिपाठी जी के राजनीतिक जीवन के बारे में जानने की कोशिश की तो पाया कि वे बड़े व्यक्तित्व के मालिक थे और इस सदन में जो बहुत–बहुत बड़े व्यक्तित्व के लोग बैठे हैं, जिनको देखकर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं।

मान्यवर, मैंने हमेशा स्वर्गीय श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी से सीखने की कोशिश की है। मुझे याद है कि एक दिन सारा विपक्ष "वेल" में था, सत्तापक्ष के लोग एक दूसरे का विरोध कर रहे थे, तब माननीय त्रिपाठी जी अकेले ही यहाँ पर किसी विषय को लेकर अपनी बात कहना चाहते थे और काफी अन्तर्विरोध के बाद भी उन्होंने अपनी बात रखने की कोशिश की, तब मैंने महसूस किया कि स्वर्गीय त्रिपाठी जी ऐसे लोगों में से थे जो दुनिया के लिए जीते हैं, उनमें से स्वर्गीय त्रिपाठी जी थे। उनसे मेरी बातें भी होती थीं, मैं उन्हें स्वामी विवेकानन्द कहता हूँ। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं, उनके बताये हुए जो मार्ग, नीति और सिद्धान्त हैं उन रास्तों पर हम चलें। उनका जो उत्तरांचल और देश के लिए जो सपना था हम सब मिलकर उनके सपने को पूरा करें। 30 अगस्त को जब उनके देहान्त की सूचना मिली तो मुझे बड़ा दुःख हुआ। जब स्वर्गीय त्रिपाठी जी विधान सभा का चुनाव लड़ रहे थे तो मेरे उम्मीदवार ने उनके बारे में काफी जानकारी दी, हम उनका विरोध भी करने गये, लेकिन जब–जब वे हमसे मिले तो उन्होंने आत्मीयता का भाव जो मेरे साथ किया, मैं कभी उसे भुला नहीं पाऊँगा। उनके देहान्त के बाद फिर हमें वहाँ जाने का मौका मिला, तो हमने देखा कि वह जननायक थे। मान्यवर, अभी माननीय जन्तवाल और माननीय विधायकों से मेरी बात–चीत हुई तो उन्होंने मुझे बताया कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने कुमाऊँ इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम माननीय त्रिपाठी जी के नाम से रखने को कहा, तो मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करता हूँ कि कुमाऊँ इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम माननीय त्रिपाठी जी के नाम से हो और पूरे सदन से अनुरोध करता हूँ कि इस मामले में सभी सहयोग करें। मान्यवर, हमारे बीच में उनके सुपुत्र श्री पुष्पेश जी को जनता ने चुनकर भेजा है।

मान्यवर, हमारी जानकारी में है कि श्री पुष्पेश त्रिपाठी डी0एस0पी0 कॉलेज, नैनीताल के छात्र थे और आज उत्तरांचल विधान सभा में सबसे कम उम्र के विधायक हैं। मेरी कल उनसे मुलाकात हुई और ऐसा लगता है कि वे अपने पिता जी की बताई हुई नीतियों और सिद्धान्तों के क्रियान्वयन करते हुए उत्तरांचल का नाम रोशन करेंगे। मैं, ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इस दुःख की घड़ी में उनको और उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष, नेता बसपा और माननीय नेता उत्तराखण्ड क्रान्ति दल और सभी माननीय विधायकों ने स्व0 विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी के प्रति जो भावना व्यक्त की हैं और उद्‌गार व्यक्त किये, मैं अपने को उससे सम्बद्ध करता हूँ। स्व0 त्रिपाठी जी के परिवार को आपकी भावनाओं, संवेदनाओं को पहुँचाने का कार्य करूँगा और आपकी भावना वहाँ तक पहुँचा दी जायेगी। जैसा कि नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय सदस्यों ने उनके बारे में बताया। वे संघर्षशील व्यक्ति थे, उनकी वाणी में तृप्तता थी। वे सदन में जब भी बोलते थे, उन्हें समय कम मिलता था फिर भी वे जन समस्याओं और पहाड़ की पीड़ा को लेकर अपनी बात रखते थे। निश्चित तौर पर यह अपूर्णीय क्षति है। हमने एक ऐसा नेता जो जनमानस से जुड़ा हुआ था, उसे खो दिया है जिसकी भरपाई सम्भव नहीं है। उन्होंने उत्तरांचल राज्य आन्दोलन के दौरान जो कार्य किया इसमें उनकी भूमिका अनुकरणीय रही। जो रास्ता उन्होंने दिखाया वह समाज के लिए, हम सब के लिए जनप्रतिनिधियों के लिए वह एक ईमानदारी और मिसाल के रूप में याद किया जायेगा। उनकी वाणी में तृप्तता थी। जो उनके व्यक्तित्व को परिलक्षित करता था। उन्हें सदन में जब भी बोलने का अवसर मिला अपनी बात को रखने का, तो जो हमारे मंत्री हैं उन्होंने उसे गम्भीरता से लिया। उन्होंने जो भी मुद्दे उठाये, वह जन कल्याणकारी और जन भावनाओं के अनुरूप उठाये। मैं आप सब की ओर से उनको श्रद्धांजलि के शब्द अर्पित करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि उनके सुपुत्र श्री पुष्पेश त्रिपाठी जो नव निर्वाचित होकर इस सदन में आये हैं वह उनके नक्शे कदम पर, उनसे प्रेरणा लेकर उनके कार्यों को पूरा करेंगे। मैं सदन से अनुरोध करता हूँ कि श्री विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी की आत्मा की शान्ति हेतु दो मिनट का मौन रखा जाय।

(दो मिनट का मौन रखा गया)

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पामुलपति वेंकट नरसिम्हा राव के निधन पर शोकोद्‌गार

मुख्यमंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)–

मान्यवर, मैं अत्यन्त दुःख के साथ भारत के आर्थिक सुधारों के प्रणेता श्री पी0वी0 नरसिंह राव की मृत्यु पर इस सदन की ओर से शोक संवेदना व्यक्त करने का प्रस्ताव करता हूँ। श्री पामुलपति वेंकट नरसिम्हा राव को 40–45 वर्षों से जानने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। जब वे आन्ध्र मंत्रिमण्डल के सदस्य थे तब से निरन्तर उनकी सहज गम्भीरता, कूटनीतिक चातुर्य और एक ऐसा राजनेता जो स्टेट्‌समैन की उपाधि थी और वे एक साधारण राजनीतिज्ञ से ऊपर उठकर राजनीति के क्षितिज में एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की उपाधि मिली, वे ऐसे महान राजनेता थे। उन्होंने निजाम हैदराबाद के राजकारों के कठोर शासनकाल में वन्देमातरम का नारा लगाया था और उसमें बढ़ चढ़कर भाग लिया था। ऐसा कोई मंत्रालय भारत सरकार में नहीं, जिसकी उन्होंने शोभा न बढ़ाई हो। विदेश मंत्रालय, गृह मंत्री, योजना मंत्री, रक्षा मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, योजना आयोग के उपाध्यक्ष इन सभी पदों को उन्होंने सुशोभित किया। उनमें मौन का संकल्पित प्रयोग करने की विशेषता थी। उन्होंने आन्ध्र के साहित्यकार की कृति

सहस्त्रफन का अनुवाद भी किया है। शेषनाग की परिकल्पना का हमारे धार्मिक ग्रन्थों में उल्लेख है। उनकी आत्मकथा यदि आप पढ़े और मैं समझता हूँ कि इसका हिन्दी अनुवाद तैयार हो गया होगा। इसका प्रथम भाग रोमांचकारी है। एक युवा से विद्यार्थी जीवन और फिर एक राजनीतिज्ञ के रूप में पहुँचना इसकी कथा जिन शब्दों में वर्णित हुई होगी, वह अनोखी है। जब वे बीमार थे तो मैं उनको देखने दो–तीन बार गया था और उनसे 10 मिनट बात करने का, उनकी मृत्यु से पहले बातचीत करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। कभी–कभी हमारा वैचारिक आंतरिक मतभेद रहा लेकिन उन्होंने इसे कभी आड़े नहीं आने दिया। वे बड़े ही दूरदर्शी व्यक्ति थे, वे जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने श्री मनमोहन सिंह जी को भारत सरकार का अर्थ व्यवस्थापक और वित्त मंत्री बनाकर उनकी योग्यता को सम्मान दिया। इससे पहले मनमोहन सिंह जी प्लानिंग कमीशन में चेयरमैन थे। हमारे देश को विकास के रास्ते पर ले जाने का और 21वीं सदी के करीब ले जाने की उन्होंने ही शुरूआत की थी। उन्होंने अपनी जो गंभीरता से कूटनीति चलाई उसका भी मुझे भली–भाँति ज्ञान है। फ्रेंच अफ्रीका के 14 देश जो अंग्रेजी से अभी भी दूर हैं और फ्रेंच के करीब हैं, उनसे अपने संबंध विकसित किये। साउथ अफ्रीका जैसे देशों से उन्होंने हमारे देश के संबंधों को बढ़ाया। इसके अतिरिक्त नाईजीरिया, इथोपिया, सुमानी से जिंबाम्बे जैसे देशों से उनके कार्यकाल में हमारे संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ी। वे हमेशा प्रयासरत रहे कि इन देशों से हमारे संबंध बहुमुखी हों। उन्होंने आशियान देशों को एक होने का भी संदेश दिया था। उनका मानना था कि यूरोप जैसे दो देश जिनमें दो–दो महायुद्ध भी हुये, लेकिन वे आज एक हो गये, यूरोपियन इकोनामी एक हो गई और आज वहां पर एक ही मुद्रा चलती है यूरो, जो हमारे सिक्कों के साथ चलती है और आज यह स्थिति आ गई है कि रूस भी इसमें शामिल होना चाहता है। जो आशियान के दक्षिण पूर्वी एशिया के देश हैं उनसे भी इसी तरह की कोई पहल करने का उन्होंने प्रयास किया। इन्हें एक आब्जर्वर स्टेट के रूप में मिलाने की बात उनके द्वारा कही गई थी। उनके व्यक्तित्व के बारे में जो भी कहा जाय वह कम है।

श्रीमन्, उनका उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश से विशेष लगाव था। जब वे प्रधानमंत्री बने थे तो, तब उत्तरकाशी में भूकम्प आया था और वे पहली बार उत्तरकाशी आये और वहां पर रात्रि विश्राम किया और मुझे विशेष निर्देश दिये कि मैं भारत सरकार के आब्जर्वर के रूप में वहां पर काम करूं। वे वहां पर आये, स्वयं आये, हमारे संकट में, हमारे सुख–दुःख में आये। अभी भी मुझे वह क्षण याद आता है। अभी जब उनका अंतिम संस्कार हैदराबाद में हुआ था तो उत्तरांचल की ओर से मैं स्वयं वहां पर गया था और उनके परिवार को हर प्रकार से उत्तरांचल की जनता की ओर से संवेदना व्यक्त की और सांत्वना दी, अभी उनका अस्थि विसर्जन कार्यक्रम हरिद्वार में हुआ था, मैं भी वहां पर उपस्थित था और सारे दलों के काफी लोग वहां पर थे। सभी लोग जो माननीय नरसिम्हा राव जी से परिचित थे उनके बारे में शोक संवेदना प्रकट कर रहे थे। मान्यवर, उनके बारे में जो भी कहा जाय वह कम है, ऐसे महान व्यक्ति के निधन पर मैं अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री मातबर सिंह कण्डारी)–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी0वी0 नरसिंहाराव, जिनका निधन 23 दिसम्बर, 2004 को नई दिल्ली में हुआ, का शोक प्रस्ताव और संवेदना

प्रस्ताव सदन में रखा, मैं, उस प्रस्ताव से अपने को सम्बद्ध करता हूँ। मान्यवर, जब हम विद्यार्थी थे, तो एक भावना व्यक्त होती थी कि नेहरू के बाद कौन? तो आम चर्चा हुआ करती थी कि नरसिम्हा राव जी बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे और जहां तक मुझे याद है, उन्हें 16 भाषाओं का ज्ञान था। मान्यवर, स्वर्गीय नरसिम्हा राव जी का राजनीतिक जीवन 1957 से शुरू हुआ। श्री राव वर्ष 1957 से 1977 तक आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे। वर्ष 1962 से 1971 तक आन्ध्र प्रदेश सरकार में मंत्री रहे तथा वर्ष 1971 से 1973 तक आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। श्री नरसिम्हा राव ने हमारे देश के प्रधानमंत्री पद पर भी विराजमान रहते हुए भी राष्ट्र की सेवा की है। इसके अतिरिक्त श्री राव भारत सरकार में विदेश मंत्री, गृह मंत्री, योजना मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री रहने के साथ ही योजना आयोग के उपाध्यक्ष भी रहे। स्व0 नरसिम्हा राव जी की जितनी प्रशंसा की जाय, वह कम है। हमने ऐसे महान नेता को खो दिया है। उन्होंने राष्ट्र की जो सेवा की, वह सदैव याद की जाएगी। उनके परिवार में 3 पुत्र तथ 5 पुत्रियाँ हैं। मैं अपने दल की ओर से तथा अपनी ओर से उनके प्रति शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ।

श्री नारायण दत्त तिवारी–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय सदन को अवगत कराना चाहता हूँ, मैं अपने संदेश में एक बात भूल गया था, उस बात का उल्लेख करना आवश्यक है। स्वर्गीय नरसिम्हा राव जी ने समन्वयकारी राजनीतिज्ञ का उदाहरण पेश किया। उनके प्रधानमंत्री काल में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी यूनाइटेड नेशन्ज डेलीगेशन के नेता रहे। हमारे यहां से जो भी डेलीगेशन जाता था उसके नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ही श्री नरसिम्हा राव जी के पूरे प्रधानमंत्रित्व काल में रहे। श्री नरसिम्हा राव जी, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के कद को किस प्रकार सम्मान दिया करते थे, यह इस बात का उदाहरण है।

श्री हरिदास–

मान्यवर, माननीय नेता सदन ने जो शोक प्रस्ताव रखा है, मैं, अपने को उससे सम्बद्ध करता हूँ। पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव जी का 30 दिसम्बर, 2004 को नई दिल्ली में निधन हो गया, यह बड़े दुःख की बात है। श्री नरसिम्हा राव जी ऐसे प्रधानमंत्री थे, जो आर्थिक सुधारों के जनक के रूप में जाने जाते थे। हमारा देश उन्हें भूला नहीं है। क्योंकि उन्होंने ही आर्थिक सुधारों की पहल की थी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने आप को माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा रखे गए शोक प्रस्ताव से सम्बद्ध करता हूँ।

श्री काशी सिंह ऐरी–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री विद्वान, भाषाविद्, लोकतांत्रिक परम्पराओं और कार्यकलापों के मर्मज्ञ और सबसे बड़ी बात आज जो नयी आर्थिक नीति का अनुसरण हमारा देश कर रहा है, उसके आरम्भक, इनीसिएटर स्वर्गीय पी0वी0 नरसिम्हा राव जी दिवंगत हो चुके हैं। मैंने उनके निधन की सूचना दूरदर्शन पर देखी, उस वक्त मैं गांव के भ्रमण पर था, यह सूचना सुनकर मुझे बड़ा कष्ट हुआ।

मान्यवर, उनके बारे में जितना हमारे माननीय नेता सदन ने कहा है उससे ज्यादा हमको जानकारी नहीं हो सकती है लेकिन फिर भी एक आध वाक्या मुझे याद है, जिसका जिक्र इस अवसर पर अवश्य करना चाहूँगा। जब हमारा उत्तराखण्ड राज्य के लिए आन्दोलन चल रहा था, यह बात अलग थी कि केन्द्र सरकार की भूमिका को लेकर आन्दोलनकारियों में बहुत गुस्सा था तथापि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राव जी से मिलने हमारा संयुक्त संघर्ष समिति का शिष्टमण्डल गया और एक बार जब हमारे नेता स्वर्गीय इन्द्रमणी बड़ौनी जी जब उनसे मुलाकात करने गये, 9.30 बजे का समय तय था किन्तु वे आधा घण्टे विलम्ब से हमारे कमरे में मिलने आए और जब आए तो उन्होंने इतनी शालीनता के साथ क्षमा याचना की कि माफ कीजिए मुझे आने में विलम्ब हो गया, आपको तकलीफ हुई होगी। उनकी इस शालीनता से हम सब हक्के बक्के रह गये उसके बाद हमारी उनसे वार्ता आरम्भ हुई। मैंने वार्ता में उनसे कहा कि यदि आपको हिमालय की रक्षा करनी है, हिमालय के पर्यावरण की रक्षा करनी है तो उत्तराखण्ड राज्य बनना चाहिए। इस बात पर उन्होंने मुझे रोका और प्रतिप्रश्न किया मैं यह जानना चाहता हूँ कि हिमालय की रक्षा के लिए, पर्यावरण की रक्षा के लिए अलग राज्य की क्या आवश्यकता है साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मैं यह प्रश्न आपके आंदोलन को हतोत्साहित करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। अपने इस प्रश्न पर उन्होंने हम लोगों से दो–तीन बार क्षमा भी माँगी। साथ ही यह भी कहा कि यह मेरी जिज्ञासा है कि अलग राज्य का हिमालयी सुरक्षा से क्या तात्पर्य है? हिमालय की रक्षा पूरे देश के लिए आवश्यक है, भारतीय उपमहाद्वीप के लिए भी आवश्यक है। अलग राज्य और हिमालय की रक्षा का क्या कोरिलेशन है। हम उनके इस व्यवहार से बहुत अभिभूत हो गये। उन्होंने कहा कि हम अलग राज्य बनने के पक्षधर हैं, वे हमारे आन्दोलन से भी सहमत हुए बाद में बहुत सी बातें आगे बढ़ी। जब हमारी उनसे वार्ता समाप्त हो गई तो हमने आपस में चर्चा की स्व0 श्री राव तो हमारे नेता सदन से भी अधिक शालीन हैं, शिष्ट हैं और ज्यादा डैमोक्रेटिक भी हैं। दूसरा वाक्या तब का है जब हमारा दूसरा शिष्टमण्डल उनसे मिलने गया तो श्री राव केन्द्र शासित राज्य बनाने में सहमत हो गये, तो हमारे नेता स्वर्गीय बड़ोनी जी ने उनसे कहा कि हम केन्द्र शासित राज्य बनाने के लिए सिद्धान्तः सहमत नहीं हैं लेकिन आप दे देंगे तो हम लौटा थोड़े ही देंगे। वे समझ गये कि ठीक है। मैं, इस बारे में पुनः बातचीत करूँगा। उसके बाद चुनाव की घोषणा होनी थी, बहुत जल्दी का कार्यक्रम था।

मान्यवर, इसके अतिरिक्त बहुत सारी बातें हैं। मान्यवर, चुनाव के बाद श्री देवगौड़ा जी की सरकार आयी। मान्यवर, यह बात भी देवगौड़ा जी के खाते में जाती है कि उन्होंने 15 अगस्त को दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से उत्तराखण्ड राज्य बनाने की घोषणा की। मान्यवर, यह एक ऐतिहासिक फैसला था, जिसको पूरी दुनियां ने सुना। मान्यवर, तब श्री नरसिम्हा राव जी प्रधानमंत्री नहीं थे और उनके खिलाफ कई मुकदमें चल रहे थे। मान्यवर, स्व0 बड़ौनी जी ने मुझसे कहा कि हमें श्री नरसिम्हा राव जी को धन्यवाद देने जाना चाहिए। तब हमारा डेलीगेशन श्री राव जी से पुनः मिला। मान्यवर, उनका आवास भी अपेक्षाकृत छोटा था और उसमें श्री राव जी अकेले बैठे अध्ययन कर रहे थे, उन्होंने हमारा उठकर स्वागत किया। स्व0 बड़ौनी जी इतने भावुक हो उठे कि उन्होंने मिलते ही उनसे कहा "श्री बद्रीनाथ जी का आशीर्वाद आपके साथ है, आपको कुछ नहीं होगा"। मान्यवर, इसके बाद बातचीत शुरू हुई हमने कहा आपने केन्द्र शासित प्रदेश

बनाने की बात कही थी, परन्तु श्री देवगौड़ा जी ने पूर्ण राज्य बनाने की घोषणा कर दी है, इसमें भी हमें आपका सहयोग था। श्री राव साहब ने केन्द्र शासित प्रदेश बनाने के पीछे तर्क दिया कि नये राज्य में सुई से लेकर झाड़ू की व्यवस्था खुद करनी होती है। हमारी मंशा यह थी कि पूरी व्यवस्था के बाद राज्य बनाया जाय। मान्यवर, मेरा आशय यह है कि जो कुछ भी वे कहते थे, उनके पीछे उनकी सार्थक मान्यता रहती थी, ऐसा मुझे महसूस हुआ। मान्यवर, वे एक विद्वान पुरुष तो थे ही इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए। मान्यवर, जब हम वहां पर थे तो उन्होंने एक अधिकारी को फोन किया तो उनसे तेलगू में बात की, दूसरे अधिकारी से बात की तो उनसे तमिल भाषा में बात की, तीसरे अधिकारी से बात की तो मराठी में बात की।

मान्यवर, राजनीतिक विचारधारा वाले कई लोग होते हैं। मान्यवर, आर्थिक सुधारों का कार्यक्रम माननीय नरसिम्हा राव जी ने शुरू किया और हमारी पिछली सरकार ने आगे बढ़ाया और आज वह पूरे देश में आगे बढ़ रहा है। जब आर्थिक सुधार होगा तभी देश आगे बढ़ेगा, इस पर चर्चा करने का अभी समय नहीं है। माननीय नरसिम्हा राव जी हमारे बीच में नहीं हैं, पर उनके जो कार्य इस देश के लिए हैं, इस देश की जनता उसका मूल्यांकन कर रही है। वे विद्वान थे इसमें कोई संशय नहीं है। मान्यवर, उनके बारे में लोग कहते थे कि "इसका दोषी कौन है, दिल्ली में जो मौन हैं", लेकिन वह मौन भी उनके लिए एक अस्त्र था, वे उतना ही बोलते थे जितनी उनकी जरूरत होती थी और मौन रहते हुए बहुत सारी समस्याओं का समाधान निकालते थे, तो उनका एक अलग व्यक्तित्व था। वे दक्षिण भारत के पहले प्रधानमंत्री हुए और पूरा 5 साल का कार्यकाल किया। मान्यवर, आप–हम माननीय नेता सदन से मांग कर रहे हैं कि विधायक निधि 75 लाख से बढ़ाकर एक करोड़ कर दें, सम्भवतया यह रिवाज भी उन्होंने ही शुरू किया था। उनके न रहने से देश ने न केवल एक कुशल प्रशासक खोया बल्कि एक विद्वान नेता भी खोया है। मैं इस मौके पर अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनकी शान्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ और हमारी संवेदनाओं को उनके परिवार तक पहुँचा दें।

श्री अध्यक्ष–

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री नरसिम्हा राव जी की शोक संवेदना और जो भावनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता विधायक दल ने व्यक्त की हैं, मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए आप सब की भावनाओं को माननीय पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री नरसिम्हा जी के परिवार तक पहुँचाऊँगा। जैसा कि दलीय नेताओं ने कहा कि उनका व्यक्तित्व असाधारण था, उनके बारे में कहा कि वे आर्थिक सुधारों के प्रणेता थे। उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। आज भी उनके आर्थिक सुधारों का लाभ पूरा देश ले रहा है। उन्होंने जो हमें दिशा दी है, मुझे विश्वास है कि आने वाले भविष्य में उसका अनुसरण करेंगे। मैं इस अवसर पर आप सब की भावनाओं को उनके परिवार तक पहुँचाने का कार्य करूँगा और ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनके परिवारजनों को इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति दे। अब हम दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखते हैं।

(तत्पश्चात् सदन में दो मिनट का मौन रखा गया)

"त्सुनामी" लहरों से भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में हुई लाखों लोगों की मृत्यु पर शोकोद्गार

मुख्यमंत्री (श्री नारायण दत्त तिवारी)–

श्रीमन्, मैं आपकी आज्ञा से सुनामी आपदाकाल में काल कवलित हुए लोगों की मृत्यु पर शोक संवेदना व्यक्त करने का प्रस्ताव रखता हूँ। मानव इतिहास में आज तक की सबसे प्रलयंकारी दैवी आपदा से देश के तटीय राज्यों सहित दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देशों में विगत 26 दिसम्बर, 2004 को आए समुद्री भूकम्प सुनामी की आपदा से लाखों लोग काल कवलित हो गए और बड़ी संख्या में लोग बेघर हो गए। इस घटना से हम सभी दु:खी एवं आहत हैं और इस आपदा की घड़ी में उत्तरांचल–उत्तराखण्ड प्रभावितों की मदद के लिए पूरी तरह से तत्पर हैं। राज्य सरकार द्वारा तात्कालिक तौर पर सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए एक करोड़ रूपये की धनराशि प्रधानमंत्री राहत कोष में दी गई है। इसके साथ ही प्रदेश के विभिन्न संगठनों, संस्थाओं आदि से भी सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए राहत कोष में योगदान किया जा रहा है। उत्तरांचल स्वयं भी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील रहा है और अनेक बार भूकम्प, भूस्खलन जैसे हादसों से राज्य में जान–माल का काफी नुकसान हुआ है। सुनामी की इस आपदा नें हमें भी भविष्य के लिए सचेत किया है और हमारा प्रयास है कि राज्य में ,बेहतर आपदा प्रबन्धन करते हुए प्राकृतिक आपदाओं के न्यूनीकरण हेतु जनसहयोग से कार्य करें। हमें प्रकृति से भी समन्वय करना है और अपने प्राकृतिक सन्तुलन को बनाये रखना है। इन चुनौतियों ने हमें आपदाओं से निपटने के प्रति सजग करने के साथ ही अन्यत्र घटने वाली घटनाओं के प्रति भी काफी संवेदनशील बनाया है। सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए राज्य में जिस तरह से लोग आगे आए हैं, उससे यह सिद्ध होता है कि आपदाओं से निपटने के लिए हम सब एक जुट हैं। हमने राज्य में प्रत्येक मकान बनाने वाले को सजग किया है कि ऐसे आवास बनायें कि वह भूकम्प से होने वाली दुर्घटनाओं को झेल सकें।

मान्यवर, सुनामी पीड़ितों की मदद के लिए सभी राजनीतिक दल, सभी जनता जिस प्रकार से आगे आये हैं, समाचार–पत्र आगे आये हैं उससे सिद्ध होता है कि पूरा देश सुनामी पीड़ितों के साथ है। मैं सुनामी त्रासदी में मारे गये लोगों के प्रति शोक व्यक्त करता हूँ। मान्यवर, सुनामी जापानी शब्द है। भूकम्प की विभीषिका के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसमें "त" शब्द जोड़ा जाता है। मेरा आग्रह है कि आप इसमें "त" शब्द जुड़वा दें। यह नाम से तो सुनामी है, लेकिन प्रभाव में कुनामी है। एशिया तक शायद हमारी आवाज न पहुँचे, लेकिन अपने देश में और प्रदेश में ऐसी प्राकृतिक आपदाओं यथा भूस्खलन आदि के लिए आपदा प्रबन्धन और अच्छा बनाया जाये ताकि आपदाओं के होने पर कम से कम जन, धन की क्षति हो। मान्यवर, मैं इन्हीं शब्दों के साथ शोक प्रस्ताव पेश करता हूँ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री मातबर सिंह कण्डारी)–

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन ने सुनामी लहरों से देश के अंदर और हमारे पड़ोसी देशों में जो तबाही हुई और उस पर जो शोक प्रस्ताव रखा और अपनी संवेदनाएं व्यक्त की, मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूँ। ये सुनामी लहरें क्या होती

है, इसे हम समाचार–पत्रों से ही महसूस कर सकते हैं। जो हमने सुना कि सुनामी लहरें जेट विमान से भी तेज गति से चलती हैं। हमारे देश में सबसे ज्यादा जन–धन की क्षति तमिलनाडु में हुई। केरल में भी क्षति हुई है और पड़ोसी देश श्रीलंका, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, मलेशिया और मालद्वीप में भी भारी क्षति हुई है। इण्डोनेशिया में सबसे ज्यादा क्षति हुई है। मान्यवर, यह एक बहुत बड़ी त्रासदी है। हमारे देश के लिए भी और पड़ोसी देशों के लिए भी। माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक करोड़ रूपये की राहत दी और हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने 500 करोड़ रुपये राहत कोष में दिये, इसके साथ–साथ हमारे राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने नव वर्ष न मनाने का जो संकल्प लिया, भारतीय जनता पार्टी ने आपदा राहत कोष बनाने का फैसला किया और भारतीय जनता पार्टी ने फैसला किया कि हमारे सांसद और विधायक अपना एक माह का वेतन त्सुनामी राहत कोष में देंगे। यह स्वागत योग्य कदम हैं। हम सब मिलकर इस दैवी आपदा में पीड़ित लोगों के लिए अपना सहयोग दें। हम दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और जो परिवार बेघर हो गये हैं, उनको बसाने के लिए हम सब अपना सहयोग दें, संकल्प लें।

हम यह चाहते हैं कि बड़ी से बड़ी संख्या में राहत कार्य करके पीड़ित परिवारों को राहत पहुँचाई जाय। मान्यवर, मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हमारे दल की और मेरी शोक संवेदना उन राज्यों और साथ ही साथ एक अनुरोध और करूंगा कि हमारे पड़ोसी देश जो इस त्रासदी से प्रभावित हुए हैं, उन तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री नारायण दत्त तिवारी–

मान्यवर, इसमें अंडमान निकोबार द्वीप समूह और सुमात्रा को भी जोड़ दें।

श्री मातबर सिंह कंडारी–

मान्यवर, ठीक है।

श्री हरिदास–

माननीय अध्यक्ष जी, जो प्रस्ताव माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष ने रखा है मैं उससे अपने को और अपने दल को संबद्ध करता हूँ। मान्यवर, दिनांक 26 दिसम्बर, 2004 को समुद्र से सटे राज्यों में जो तूफान सुनामी लहरों से आया और उसमें हजारों परिवार तबाह हो गये। मैं अपने दल और विधायकों की ओर से तथा अपनी ओर से हार्दिक संवेदनायें व्यक्त करता हूँ तथा जो भी सर्वदलीय बैठक में बात रखी जायेगी वह मान्य होगी।

श्री काशी सिंह ऐरी–

माननीय अध्यक्ष जी, जब सारी दुनिया के लोग और खास तौर पर ईसाई धर्मावलम्बी 25 दिसम्बर को बड़ा दिन या क्रिसमस मना रहे थे और नव वर्ष के आगमन की खुशियों का इंतजार कर रहे थे तभी 26 दिसम्बर को सबसे बड़ी मानवीय त्रासदिक घटना घटित हुई, जिसने हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के तटीय देशों, इंडोनेशिया और भारत के कई राज्यों में एक बहुत बड़ी मानवीय त्रासदी को पेश किया। बहुत से लोगों को पहली बार इस शब्द से वाक्या पड़ा, इस शब्द को पहली बार सुना।

जिसको माननीय नेता सदन ने कहा कि त्सुनामी लहर, जिसे हिन्दी मीडिया सुनामी लिखता है। अभी कुछ दिन पूर्व में नेता सदन के पास बैठा हुआ था तो वे कह रहे थे कि नाम तो सुनामी है, कितना सुन्दर है, लेकिन काम कितना क्रूर है। जैसा कि मैंने सुनामी के बारे में पढ़ा है इसका अर्थ है तटीय लहरें और यह सुनामी शब्द जापानी में कहा जाता है। समुद्र में जब हलचल होती है तो इस समुद्री हलचल का केन्द्र में तो कुछ पता नहीं चलता है लेकिन यह जब उथले तटों की ओर बढ़ती है तो वे बढ़ती ही चली जाती है और बहुत ही वेग के साथ यह आती हैं। वास्तव में यह एक बहुत ही बड़ी त्रासदी है और इससे हमारे देश के तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, केरल, अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों में बहुत सारे लोग प्रभावित हुए हैं। इस पूरी त्रासदी में डेढ़ लाख लोगों से अधिक के काल कलवित होने की संभावना है और कितने ही लोग इसमें बेघर हो गये हैं। लेकिन मान्यवर, इस घटना ने एक बात और साबित की है कि आज विश्व भर में संचार क्रान्ति के कारण इस त्रासदी की जानकारी सबको हो गई है और सारा विश्व आज इस विभीषिका को लेकर एक हो गया है और राहत कार्यों के लिए भी एक हो गया है। राहत कार्य और पुनर्वास किया जाना आज सबकी इच्छा हो गई है और जितनी भी सहायता इन प्रभावितों की हो सकती है, वह की जा रही है।

मान्यवर, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी प्रधानमंत्री राहत कोष में धनराशि दी है। मान्यवर, इसके अलावा भी जैसा कि हमने कल दलीय नेताओं की बैठक में इस बात का जिक्र किया था कि यदि और अधिक धन की आवश्यकता होगी तो हम सभी लोग उसके लिए सहर्ष तैयार हैं। यह एक भीषण त्रासदी है। अभी माननीय नेता सदन ने कहा कि हम भी इस प्रकार की त्रासदी से कई बार प्रभावित हो चुके हैं और आने वाले समय में भी हमारे प्रदेश को ऐसी दैवीय आपदाएं झेलनी पड़ सकती हैं। हम अपने दुःख में दूसरों की सहायता की आशा करते हैं, तो दूसरों के दुःख में भी हमें सहायता करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस मौके पर मैं दो बातें कहना चाहता हूँ, जो मुझे सुखद लगीं। पहली बात तो, यह समाचार आया कि हमारे देश की सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सेवाओं को लेने से विनम्रतापूर्वक मना कर दिया और कहा कि हम समर्थ हैं और हमारे पास सारे संसाधन और योग्यता है। यह समाचार मैंने नहीं पढ़ा था, मेरे पुत्र ने यह समाचार मुझे पढ़ाया कि यह पहली बार हुआ है कि भारत ने ऐसी त्रासदी में किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सहायता लेने से इंकार किया है। इसके बाद उसने मुझसे प्रश्न पूछा कि इससे आप क्या समझते हैं? मैंने पूरा समाचार नहीं पढ़ा था, मैंने कहा आप ही बताइये, तो उसने कहा कि हिन्दुस्तान ने दावा किया है कि हमको वीटो पावर के साथ सुरक्षा परिषद् में सीट मिलनी चाहिए। ऐसे दावे के बाद अगर हम ऐसी त्रासदी में अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सहायता लेंगे तो हमारा शक्तिशाली देश होने का दावा खोखला पड़ जाएगा। सरकार ने यह दावा किया है कि हम शक्तिशाली देश हैं तो यह एक सुखद बात है कि हम एक आर्थिक शक्ति हैं। इस सम्बन्ध में हम लोगों को जो भी सहयोग देना पड़ेगा उसके लिए हम सहर्ष तैयार हैं। दूसरी जो सुखद बात मुझे लगी, वह यह है कि इस सम्बन्ध में हमारे जितने भी राजनीतिक दल हैं, खासकर कांग्रेस तथा भारतीय जनता पार्टी और दूसरे दल के लोगों ने कहा कि इस पर हमें राजनीतिक मतभेद भुला देने चाहिए तथा मिल जुल कर कार्य करना चाहिए। मान्यवर, ऐसा पहली बार पढ़ने को मिला है। मान्यवर, यह एक भीषण त्रासदी है और आज भी इस त्रासदी से लोग उबर

नहीं पाये हैं। पूरा देश इस त्रासदी से पीड़ित लोगों को उबारने में लगा है। हम सब भी उनके दुःख में शरीक हैं और उनके प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। मैं आपके माध्यम से अपने तथा अपने दल के लोगों की ओर से शोक व्यक्त करता हूँ। इसके साथ ही मैं, ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इन त्सुनामी लहरों के कारण जितने भी लोग काल कवलित हुए हैं, उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। साथ ही यह प्रार्थना भी करता हूँ कि इस प्रकार की आपदा किसी भी देश में न आए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

श्री अध्यक्ष–

गत 26 दिसम्बर, 2004 को आये समुद्री भूकम्प से भारतीय महासागर में पैदा हुई त्सुनामी लहरों ने पूरी दुनिया को स्तब्ध कर दिया। कई परिवार काल कवलित हो गये, कई लोग बेघर हो गये। कोई कल्पना भी नहीं करता था कि समुद्री लहरें इतनी जन–हानि और जान–माल का नुकसान कर सकती हैं। पूरे विश्व के जनमानस को इस घटना ने झकझोर कर रख दिया। आज पूरी दुनिया के वैज्ञानिक इन सुनामी लहरों के बचाव के लिए तथा इनसे होने वाले विनाश को रोकने के लिए तथा इसकी पुनरावृत्ति न होने पाये, इसके प्रयास में लगे हैं। यह घटना हम सबके लिए स्तब्धकारी है। जैसा कि माननीय नेता सदन ने कहा, जनता और हम सभी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर शोक की इस घड़ी में एकजुट होकर सुनामी पीडितों की यथासंभव जितनी मदद हो सकती है, हमें करनी चाहिए। हमारी सरकार और स्वयं सेवी संस्थायें भी दुःख की घड़ी में उनके साथ हैं। जैसा कि नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि उनके द्वारा पीड़ित परिवारों के लिए, उनके उन्नयन के लिए उनकी सहायता के लिए हम प्रयासरत् हैं और वक्त भी ऐसा ही है कि हमको दुःख की इस घड़ी में एकजुट होकर उनकी सहायता करनी चाहिए। उत्तरांचल में इस तरह की प्राकृतिक आपदाएं प्रायः घटित हो जाती हैं जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जब उत्तरकाशी में भूकम्प की घटना घटित हुई थी तो पूरा देश एकजुट होकर उत्तरांचल की सहायता के लिए आगे आया था। उत्तरकाशी में आए भूकम्प में कई परिवार काल कवलित हुए थे। इस समय इस दुःख की घड़ी में हमारा भी फर्ज बनता है कि हम सब इस त्रासदी से निपटने के लिए उनकी मदद करें। माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय ऐरी जी और माननीय हरिदास जी ने जो संवेदना काल कवलित परिवारों के लिए व्यक्त की है, पूरा सदन उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा जो परिवार पीड़ित हैं, उनको यह दुःख सहने की ईश्वर शक्ति प्रदान करे।

अब हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखते हैं।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सभी सदस्य दो मिनट मौन के लिए खड़े हुए)

श्री अध्यक्ष–

अब हम स्वर्गीय विपिन चन्द्र त्रिपाठी जी के सम्मान में कल पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए उठते हैं।

(इसके बाद सदन की कार्यवाही 12 बजकर 46 मिनट पर अगले दिन के 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई।)

देहरादून :

दिनांक : 11 जनवरी, 2005

महेश चन्द्र,
सचिव, विधान सभा,
उत्तरांचल।

पी0एस0यू0 (आर0ई0) 4 विधान सभा/285–05–7–2005–200 प्रतियां (कम्प्यूटर/ऑफसेट)।